Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

क्षेत्रीय साहित्य और अखिल भारतीय सांस्कृतिक पहचान

डॉ.फाल्गुनीबेन भीखुभाई प्रजापति
सहायक अध्यापक
किसान भारती आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, मेवड़
चलभाष नंबर: ७०४६०९८८६२
ईमेल: prajapatif793@gmail.com

सारंश

भारत की सांस्कृतिक संरचना उसकी भाषाई और साहित्यिक विविधता पर आधारित है। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विकसित क्षेत्रीय भाषाएँ और उनका साहित्य स्थानीय जीवन, लोकसंस्कृति, परंपराओं, सामाजिक मूल्यों तथा ऐतिहासिक अनुभवों की सजीव अभिव्यक्ति करते हैं। क्षेत्रीय साहित्य अपने-अपने क्षेत्र की विशिष्ट पहचान को सुरक्षित रखते हुए भारतीय संस्कृति की समग्र चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह साहित्य केवल स्थानीय यथार्थ तक सीमित न रहकर मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक आदर्शों को व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है।इस शोधात्मक अध्ययन में क्षेत्रीय साहित्य की अवधारणा, उसके ऐतिहासिक विकास और प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य आपसी संवाद और आदान-प्रदान के माध्यम से अखिल भारतीय सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है। भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक क्षेत्रीय साहित्य ने सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया है।

शब्द कुंजी:क्षेत्रीय साहित्य, भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक पहचान, भाषाई विविधता, राष्ट्रीय एकता

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

भूमिका:

भारतीय साहित्य की परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध परंपराओं में से एक है। भारत में साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि यह समाज, संस्कृति, दर्शन और जीवन-दृष्टि का संवाहक रहा है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं तक साहित्य की निरंतर धारा प्रवाहित होती रही है।

क्षेत्रीय भाषाओं में रचित साहित्य भारतीय समाज की जमीनी सच्चाइयों, लोकजीवन, संघर्षों, आस्थाओं और आकांक्षाओं का प्रामाणिक दस्तावेज है। यही साहित्य राष्ट्रीय स्तर पर एक साझा सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करता है, जिसे हमअखिल भारतीय सांस्कृतिक पहचानकहते हैं।

- ## क्षेत्रीयसाहित्यकीअवधारणा:

क्षेत्रीय साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है, जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र की भाषा में रचित हो और उस क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा भावनात्मक विशेषताओं को अभिव्यक्त करता हो।

क्षेत्रीय साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

- स्थानीय भाषा और बोली का प्रयोग
- लोकसंस्कृति और परंपराओं का चित्रण
- क्षेत्रीय समस्याओं और सामाजिक यथार्थ का प्रस्तुतीकरण
- जनसामान्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति

क्षेत्रीय साहित्य लोकजीवन से जुड़ा होता है, इसलिए उसमें कृत्रिमता के बजाय सहजता और प्रामाणिकता अधिक होती है।

- ## भारतीयभाषाईविविधताऔरसाहित्य:

भारत में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ हैं, जिनमें हिंदी, बंगला, तमिल, तेलुगु,मराठी, गुजराती, कन्नड़,मलयालम, ओड़िया, असमिया आदि प्रमुख हैं। प्रत्येक भाषा का अपना समृद्ध साहित्यिक इतिहास है।भारत भाषाई विविधता की दृष्टि से विश्व के समृद्धतम देशों में से

एक है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ न केवल संप्रेषण का माध्यम हैं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक चेतना की वाहक भी हैं। भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं के अतिरिक्त सैकड़ों लोकभाषाएँ और बोलियाँ देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं। इन सभी भाषाओं का अपना विशिष्ट साहित्य है, जो संबंधित क्षेत्र के इतिहास, लोकसंस्कृति, परंपराओं, जीवन-दर्शन और सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करता है।

भारतीय साहित्य की परंपरा संस्कृत, पालि और प्राकृत जैसी प्राचीन भाषाओं से प्रारंभ होकर आधुनिक भारतीय भाषाओं तक विस्तृत है। तमिल, बंगला, हिंदी,मराठी, तेलुगु,कन्नड़, मलयालम, गुजराती, असमिया और ओड़िया जैसी भाषाओं के साहित्य ने भारतीय सांस्कृतिक चेतना को समृद्ध किया है। यद्यपि भाषाएँ भिन्न हैं, फिर भी उनके साहित्य में करुणा, प्रेम, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय और आध्यात्मिकता जैसे साझा मानवीय मूल्य विद्यमान हैं।

अनुवाद और साहित्यिक आदान-प्रदान के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के साहित्य एक-दूसरे से जुड़े हैं, जिससे अखिल भारतीय साहित्यिक परंपरा का निर्माण हुआ है। इस प्रकार भारतीय भाषाई विविधता साहित्य को बहुआयामी, सजीव और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ बनाती है।

- भाषाईविविधता: बाधानहीं, शक्ति

भारतीय संदर्भ में भाषाई विविधता को अक्सर विघटन के रूप में देखा गया, किंतु वास्तव में यह सांस्कृतिक समृद्धि का आधार है। साहित्य के माध्यम से विभिन्न भाषाएँ एक-दूसरे से संवाद स्थापित करती हैं और एक साझा भारतीय चेतना का निर्माण करती हैं।भारत की भाषाई विविधता को प्रायः एक चुनौती या बाधा के रूप में देखा जाता है, किंतु वास्तविकता में यह देश की सबसे बड़ी शक्ति है। विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ भारतीय समाज के बहुरंगी सांस्कृतिक स्वरूप को अभिव्यक्त करती हैं। प्रत्येक भाषा अपने साथ विशिष्ट साहित्य, लोकपरंपराएँ, जीवन-मूल्य और ऐतिहासिक अनुभव लेकर आती है, जो राष्ट्रीय संस्कृति को समृद्ध बनाते हैं।भाषाई विविधता के कारण भारत में विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति के अनेक रूप विकसित हुए हैं। यह विविधता आपसी सहिष्णुता, संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करती है। साहित्य, कला और संगीत के क्षेत्र में विभिन्न भाषाओं की रचनाएँ अनुवाद के माध्यम से एक-दूसरे तक पहुँचती हैं, जिससे अखिल भारतीय सांस्कृतिक चेतना का निर्माण होता है।

इसके अतिरिक्त, भाषाई विविधता लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है, क्योंकि यह प्रत्येक समुदाय को अपनी भाषा और पहचान के साथ आगे बढ़ने का अवसर देती है। यह विविधता किसी प्रकार का विभाजन उत्पन्न नहीं करती, बल्कि 'विविधता में एकता' की भावना को मजबूत करती है। इस प्रकार भाषाई विविधता भारत के लिए बाधा नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक शक्ति का सशक्त आधार है।

- क्षेत्रीयसाहित्यकाऐतिहासिकविकास

भक्तिकाल और क्षेत्रीय भाषाएँ

भक्तिकाल में कबीर, तुलसी, सूरदास, नामदेव, चैतन्य महाप्रभु, अंडाल आदि संतों ने क्षेत्रीय भाषाओं में रचना कर साहित्य को जनसुलभ बनाया। इससे अखिल भारतीय सांस्कृतिक चेतना को नई दिशा मिली।भक्तिकाल भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं को विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इस काल में संत-कवियों ने संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा के स्थान पर जनभाषाओं को माध्यम बनाकर अपने विचार व्यक्त किए। कबीर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, नामदेव, चैतन्य महाप्रभु, नानकदेव और अंडाल जैसे भक्त कवियों ने अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मराठी, पंजाबी, बंगला, तमिल आदि क्षेत्रीय भाषाओं में रचनाएँ कीं।भक्तिकालीन साहित्य का मुख्य उद्देश्य जनसामान्य तक भक्ति, नैतिकता और सामाजिक समरसता का संदेश पहुँचाना था। क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग से साहित्य अधिक सहज, सरल और प्रभावशाली बना। इसने जाति-पाँति, संप्रदाय और भाषाई भेदभाव को कम किया तथा अखिल भारतीय सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ किया। इस प्रकार भक्तिकाल में क्षेत्रीय भाषाओं ने भारतीय साहित्य को जनोन्मुखी और राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

- औपनिवेशिककालऔरनवजागरण

19वीं शताब्दी में बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और हिंदी प्रदेशों में नवजागरण हुआ। इस काल में क्षेत्रीय साहित्य ने सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन को बल प्रदान किया।औपनिवेशिक काल भारतीय इतिहास का एक निर्णायक चरण रहा|जिसने समाज, राजनीति और साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला। इस काल में पश्चिमी शिक्षा, आधुनिक विचारधाराओं और मुद्रण तकनीक के प्रसार से भारतीय समाज में नवजागरण की चेतना उत्पन्न हुई। नवजागरण का प्रभाव क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

है। बंगाल में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय; हिंदी क्षेत्र में भारतेन्दु हरिश्चंद्र; महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले और विष्णुशास्त्री जैसे विचारकों और साहित्यकारों ने सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का स्वर उठाया।

औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध साहित्य ने जागरूकता फैलाने का कार्य किया। विधवा-पुनर्विवाह, स्त्री-शिक्षा, जाति-उन्मूलन और स्वदेशी भावना जैसे विषय प्रमुख बने। इस प्रकार औपनिवेशिक काल का नवजागरण क्षेत्रीय साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज को आधुनिकता, आत्मबोध और राष्ट्रीय एकता की ओर अग्रसर करने वाला सिद्ध हुआ।

- **क्षेत्रीयसाहित्यऔरअखिलभारतीयसांस्कृतिकतत्व**

भारतीय संस्कृति के कुछ मूल तत्व हैं–

- सहिष्णुता
- आध्यात्मिकता
- लोककल्याण
- पारिवारिकमूल्य
- प्रकृतिसेसामंजस्य

ये तत्व विभिन्न भाषाओं के साहित्य में भिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुए हैं।

- **लोककथाएँऔरमिथक:**

रामायण, महाभारत, पुराण और लोककथाएँ लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अलग-अलग रूपों में मिलती हैं। यह सांस्कृतिक एकता का सशक्त प्रमाण है।लोक कथाएँ और मिथक भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं। ये कथाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से संप्रेषित होती रही हैं और समाज की सामूहिक स्मृति, विश्वासों तथा जीवन-मूल्यों को प्रतिबिंबित करती हैं। लोक कथाओं में जनसामान्य के अनुभव, संघर्ष, आशाएँ और नैतिक आदर्श सरल एवं रोचक रूप में प्रस्तुत होते हैं। वहीं मिथक धार्मिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक चेतना से जुड़े होते हैं, जो मनुष्य और ब्रह्मांड के संबंध को समझाने का प्रयास करते हैं।विभिन्न क्षेत्रीय देवी-देवताओं से जुड़ी कथाएँ भारत की लगभग सभी भाषाओं और संस्कृतियों में अपने-अपने रूपों में विद्यमान हैं। इन कथाओं की विविधता के बावजूद उनके मूल भाव समान हैं, जो अखिल भारतीय सांस्कृतिक एकता को दर्शाते हैं। इस प्रकार लोक

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

कथाएँ और मिथक भारतीय संस्कृति की निरंतरता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करते हैं।

- अनुवादकीभूमिका

अखिल भारतीय सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में साहित्यिक अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुवाद के माध्यम से एक भाषा का साहित्य दूसरी भाषाओं तक पहुँचता है।अनुवाद भारतीय साहित्य और संस्कृति के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। एक भाषा में रचित साहित्य अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषाओं के पाठकों तक पहुँचता है, जिससे साहित्यिक संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान संभव होता है।

अनुवाद के कारण क्षेत्रीय साहित्य की सीमाएँ विस्तृत होती हैं और वह अखिल भारतीय स्तर पर पहचान प्राप्त करता है। रवींद्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद, महाश्वेता देवी, यू.आर. अनंतमूर्ति जैसे साहित्यकारों की कृतियाँ अनुवाद के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुईं। इसके साथ ही अनुवाद भारतीय समाज में सहिष्णुता, समझ और एकता की भावना को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार अनुवाद न केवल भाषाई दूरी को कम करता है, बल्कि अखिल भारतीय सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

- अनुवाद: सांस्कृतिकसेतु
  - प्रेमचंद, टैगोर, महाश्वेता देवी, यू.आर. अनंतमूर्ति जैसे लेखकों का साहित्य अनुवाद के कारण राष्ट्रीय बना।
  - साहित्य अकादमी और अन्य संस्थाओं ने इस प्रक्रिया को सशक्त किया।

➢ आधुनिकता, वैश्वीकरण और क्षेत्रीय साहित्य

वैश्वीकरण के प्रभाव से क्षेत्रीय साहित्य में भी परिवर्तन आया है। शहरीकरण, प्रवासन, पहचान संकट, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि विषय प्रमुख हुए हैं।आधुनिकता और वैश्वीकरण ने क्षेत्रीय साहित्य के स्वरूप और विषयवस्तु में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। औद्योगीकरण, शहरीकरण, तकनीकी विकास और वैश्विक संपर्कों के प्रभाव से समाज की संरचना बदली है, जिसका प्रभाव साहित्य में भी स्पष्ट दिखाई देता है। समकालीन क्षेत्रीय साहित्य में पहचान का संकट, प्रवासन, उपभोक्तावाद, स्त्री विमर्श, दलित चेतना और पर्यावरण संबंधी चिंताएँ प्रमुख

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

विषय बनकर उभरी हैं।वैश्वीकरण के कारण स्थानीय जीवन पर बाहरी प्रभाव बढ़े हैं, किंतु क्षेत्रीय साहित्य ने अपनी जड़ों से जुड़े रहकर इन परिवर्तनों का सृजनात्मक मूल्यांकन किया है। स्थानीय अनुभवों को वैश्विक संदर्भों से जोड़ते हुए यह साहित्य मानवीय संवेदनाओं को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करता है। इस प्रकार आधुनिकता और वैश्वीकरण के युग में क्षेत्रीय साहित्य केवल परिवर्तन का दस्तावेज नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता को सुरक्षित रखते हुए समाज को आत्ममंथन की दिशा में भी प्रेरित करता है।

➢ स्थानीयतामेंवैश्विकचेतना

आधुनिक क्षेत्रीय साहित्य स्थानीय समस्याओं को वैश्विक संदर्भों से जोड़ता है, जिससे भारतीय संस्कृति की समकालीन पहचान उभरती है।स्थानीयता में वैश्विक चेतना आधुनिक साहित्य का एक महत्वपूर्ण आयाम है। यह दृष्टिकोण यह दिखाता है कि भले ही साहित्य किसी विशेष क्षेत्र, भाषा या संस्कृति से जुड़ा हो, फिर भी उसमें समकालीन वैश्विक मुद्दों और मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति संभव है। क्षेत्रीय साहित्य अपने स्थानीय अनुभव, जीवनशैली, परंपराएँ और सामाजिक समस्याएँ प्रस्तुत करता है, लेकिन इसके माध्यम से वैश्विक सोच और सार्वभौमिक संवेदनाएँ भी उजागर होती हैं।उदाहरण के तौर पर, प्रवासन, पर्यावरण संकट, स्त्री विमर्श, दलित चेतना और सामाजिक असमानता जैसे विषय क्षेत्रीय साहित्य में अपने स्थानीय संदर्भ में प्रस्तुत होते हैं, फिर भी उनका संदेश वैश्विक मानवीय स्तर पर अर्थपूर्ण होता है। इस प्रकार स्थानीय अनुभव और वैश्विक चेतना का मिश्रण साहित्य को अधिक समकालीन, प्रासंगिक और बहुआयामी बनाता है। यह भारतीय संस्कृति की बहुरंगी पहचान को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत करने का माध्यम भी बनता है।

- **हिंदीऔरअन्यभारतीयभाषाओंकाअंतर्संबंध**

हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है, परंतु उसका विकास अन्य भारतीय भाषाओं से निरंतर संवाद के बिना संभव नहीं।

  - हिंदी साहित्य पर बंगला, उर्दू, मराठी, पंजाबी का प्रभाव
  - साझा सांस्कृतिक प्रतीकों का आदान-प्रदान

- **क्षेत्रीयसाहित्यऔरराष्ट्रीयएकता**

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

क्षेत्रीय साहित्य राष्ट्रीय एकता के विरुद्ध नहीं, बल्कि उसका आधार है। यह विविध अनुभवों को एक साझा मंच प्रदान करता है।क्षेत्रीय साहित्य राष्ट्रीय एकता के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत की बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक संरचना में प्रत्येक क्षेत्र की भाषा और साहित्य उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान, परंपराएँ और सामाजिक चेतना को व्यक्त करता है। हालांकि भाषाएँ और बोलियाँ भिन्न हैं, फिर भी उनके साहित्य में साझा मानवीय मूल्य, नैतिकता और सामाजिक आदर्श देखने को मिलते हैं।

क्षेत्रीय साहित्य विभिन्न समुदायों के अनुभवों और संघर्षों को उजागर करके समाज में सहिष्णुता, समानता और समझ की भावना विकसित करता है। अनुवाद और साहित्यिक आदान-प्रदान के माध्यम से यह साहित्य अन्य भाषाओं और क्षेत्रों तक पहुँचता है, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर साझा सांस्कृतिक चेतना का निर्माण होता है। इस प्रकार क्षेत्रीय साहित्य राष्ट्रीय एकता का विरोध नहीं, बल्कि उसका आधार है। यह विविधता में एकता की भारतीय अवधारणा को सुदृढ़ करता है और देश के सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे को मजबूत बनाता है।

- विविधतामेंएकता

भारत की सांस्कृतिक पहचान किसी एक भाषा या संस्कृति पर आधारित नहीं, बल्कि सभी क्षेत्रीय संस्कृतियों के सामूहिक योगदान से निर्मित है।भारत की सांस्कृतिक पहचान की सबसे विशिष्ट विशेषता उसकीविविधता में एकताकी अवधारणा है। देश में अनेक भाषाएँ, धर्म, जातियाँ, परंपराएँ और लोककलाएँ विद्यमान हैं, फिर भी ये सभी तत्व एक साझा राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान का निर्माण करते हैं। यह एकता केवल राजनीतिक या भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक स्तर पर भी महसूस की जाती है।

साहित्य इस अवधारणा को सशक्त बनाता है। क्षेत्रीय भाषाओं और उनकी रचनाओं के माध्यम से भिन्न-भिन्न अनुभव, भावनाएँ और मूल्य साझा होते हैं, जिससे सभी क्षेत्रों के लोग एक-दूसरे की संवेदनाओं और सांस्कृतिक धरोहर से परिचित होते हैं। लोककथाएँ, मिथक, भक्तिकालीन कविताएँ और आधुनिक साहित्य सभी मिलकर भारतीय समाज में सहिष्णुता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता को स्थापित करते हैं। इस प्रकारविविधता में एकताभारत की सबसे बड़ी शक्ति है, और साहित्य इसकी पुष्टि और संवर्धन का सबसे सशक्त माध्यम है।

Samvid Multidisciplinary Research Journal
Where researchers meet their destiny...
ISSN 2582-015X

➢ समकालीनचुनौतियाँ

- भाषाई वर्चस्व का खतरा
- डिजिटल माध्यमों में क्षेत्रीय भाषाओं की सीमित उपस्थिति
- युवा पीढ़ी में मातृभाषा से दूरी

इन चुनौतियों के बावजूद क्षेत्रीय साहित्य अपनी जड़ों से जुड़ा रहकर निरंतर विकसित हो रहा है।

निष्कर्ष:

यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना की आत्मा है। यह न केवल स्थानीय समाज का दर्पण है, बल्कि अखिल भारतीय सांस्कृतिक पहचान का आधार स्तंभ भी है। विविध भाषाओं में रचित साहित्य भारतीय संस्कृति को बहुरंगी, बहुस्वर और जीवंत बनाता है।अतः यह कहा जा सकता है किक्षेत्रीय साहित्य और अखिल भारतीय सांस्कृतिक पहचान एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं। भारतीय संस्कृति की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता में निहित है, और साहित्य इस विविधता को एकता में परिवर्तित करने का सशक्त माध्यम है।

संदर्भसूचि

1. रामविलास शर्मा -भारतीय साहित्य की भूमिका
2. नामवर सिंह -दूसरी परंपरा की खोज
3. सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय -भारतीय साहित्य परंपरा
4. साहित्य अकादमी प्रकाशन
5. यू.आर. अनंतमूर्ति - निबंध संग्रह